|  |
| --- |
| 21. Juli 2024 |
| **16. Sonntag im Jahreskreis B** |
| Erste Lesung: Jer 23,1-6; Zweite Lesung: Eph 2,13-18; Evangelium: Mk 6,30-34 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 144, 1+3+6+7 | Nun jauchzt dem Herren  |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 104 | Kyrie eleison |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 105 | Gloria in excelsis Deo |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 23, 1-6 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 37, 1 | Der Herr ist mein Hirt |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 421, 1+2 | Mein Hirt ist Gott der Herr |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 175, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:*  |
|  | *Meine Schafe hören auf meine Stimme;* |
|  | *ich kenne sie und sie folgen mir.* |
|  |  |
| Credo: | GL 122 | Credo in unum Deum |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 477, 1+3 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 105 | Sanctus |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 106 | Agnus Dei |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 366 | Jesus Christus, guter Hirte |
|  | GL 384, 1-3! | Hoch sei gepriesen |
|  | GL 281, 3 | Ich bin euer Weg geworden |
|  | GL 803, 6 | Guter Hirt, der seine Herde |
|  | GL 808, 8 | Guter Hirt, du wahre Speise |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 455, 1+3 | Alles meinem Gott zu Ehren |
|  | GL 487, 4+5 | Du guter Hirt |